Editorial
पूर्णता के प्रतीक : बुद्ध

पूर्णता शब्द का अर्थ पूर्ण होने की अवस्था या भाव है। अर्थात् जो पुरी तरह से भरा हुआ हो, जिसमें कोई अवकाश या स्थान रिक्त न रह गया हो। अतः तृष्णा को घटाकर ही मनुष्य पूर्णता की ओर अगसर होता है। जिस प्रकार पूर्णता से प्रतिपादित मनुष्य सभी तरह से तृप्त और सन्तुष्ट होता है। इसी क्रम में सिद्धार्थ ने भी अनेक जन्मों की अनवरत साधाना के फलस्वरूप पूर्णत्व प्राप्त किया और वे बुद्ध कहलाये। उनका जन्म, जन्म के पश्चात् सम्बोधि एवं महापरिनिर्वाण में परिपूर्ण होकर पूर्णता के प्रतीक बने।

सर्वप्रथम सिद्धार्थ ने माँ के गर्भ में पुरे 10 मास का परिपूर्ण अवधि स्वस्थ रूप में व्यतीत किया। क्योंकि दस माह की अवधि गर्भस्थ शिशु के शारीरिक व मानसिक विकास के लिए पर्याप्त होता है।

सिद्धार्थ के जन्म से उनके माता–पिता की पुत्र–कामना पूर्ण हुई तो उन्होंने सिद्धार्थ नामकरण किया। बालक के जन्म के पांचवे दिन असित ऋषि ने उसमें महापुरूषों के लक्षणों को देखकर भविष्यवाणी की कि 'यदि यह बालक गृहस्थ रहेगा, तो यह चक्रवर्ती राजा बनेगा और यदि यह गृहत्याग कर प्रव्रजित हो जायेगा तो वह सम्यक्सम्बुद्ध होगा। यह भविष्यवाणी भी पूर्णता की और संकेत करती है क्योंकि सम्राटों के भी सम्राट अर्थात् चक्रवर्ती राजा बनना स्वयं में सांसारिक दृष्टि से परिपूर्णता का बोधक है और वैराग्य तथा ज्ञान से सम्यक्सम्बुद्ध होना तो श्रेष्ठ पूर्णत है ही।

सिद्धार्थ कुमार की आठ वर्ष की आयु में शिक्षा आरम्भ हुई। उन्होंने सोलह वर्ष की आयु तक उस समय के सभी शास्त्रों एवं विद्याओं में निपुण होकर पूर्णत्व को प्राप्त किया। सोलह वर्ष की अवस्था मे ही वे सुन्दर, सुशील एवं गुणवती यशोधरा को पत्नी के रूप में पाकर पारिवारिक पूर्णता की ओर अग्रगामी हुए। इसके उपरान्त 29 वर्ष की आयु में पुत्र–रत्न की प्राप्ति करके सांसारिक धर्म की परिपूर्णता को पाया।

दुःखों से मुक्ति पाने हेतु सिद्धार्थ कुमार निरंतर 6 वर्षों तक दृढ़ निश्चय करके कठोर तपस्या कर 35 वर्ष की अवस्था में बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति की। तत्पश्चात् वे सम्यक् सम्बुद्ध कहलाये। ज्ञान प्राप्ति के बाद 80 वर्ष की अवस्था तक बुद्ध ने धर्म–वृष्टि की तथा वे जागतिक–दुःखों से त्राण दिलाने वाले करुण–सेतु बने। इसी क्रम में क्रमशः उनके उपदेशों को प्रथम वचन, मध्यम वचन, तथा अन्तिम वचन के रूप में बाँटा गया है। सम्बोधि प्राप्ति के पश्चात् ही उन्होंने प्रथम वचन की ये गाथायें मुखरित हुई–

"अनेकजाति संसारं सन्धविस्सं अनिब्बिसं,
गहकारकं गवेसन्तो दुक्खा जाति पुनप्पुनं,
गहकारक, दिट्ठोसि पुन गेहं न काहसि,
सब्बा ते फासुका भग्गा गहकूटं विसंखितं,
विसंखारागतं चित्तं तण्हानं खयमज्झगा" ति

–पठमं बुद्धवचनं

अर्थात् बिना रुके अनेक जन्मों से संसार में दौड़ता रहा। गृह को बनाने वाले (तृष्णा) को खोजते हुए पुनः पुनः दुःख (भय) में पड़ता रहा। हे गृहकारा (तृष्णा)! मैंने तुझे देख लिया, (अब) तू फिर से अपना सिर नहीं उठा सकेगी। तेरी सभी कडियां भग्न हो गयी। गृह का शिखर गिर गया। चित्त संस्काररहित हो गया। तृष्णा का क्षय करके अर्हत् हो गया।

ऐसे अनेक उदाहरणों से बौद्ध साहित्य समृद्ध एवं दर्शनीय है जो बुद्ध के उदात्त चरित्र और गुणों का प्रकाशन करते हैं। ऐसे पूर्णव्यक्तित्व वाले बुद्ध के जीवन की चार प्रमुख घटनाएँ– जन्म, बोधि–प्राप्ति, धर्मचक्रप्रवर्तन और महापरिनिर्वाण पूर्णिमा के दिन ही घटित हुई। इस प्रकार पूर्णता के प्रतीक चंद्रमा और बुद्ध दोनों परस्पर सम्बद्ध है और पूर्णता ही इन दोनों के घनिष्ठ सम्बन्धों की परिचायक है। इन पूर्णत्व प्राप्त बुद्ध के सम्पर्क में आने वाले अनेक व्यक्तियों ने भी उनकी सत्संगति से पूर्णत्व लाभ किया।

संक्षेपतः पूर्णता के द्योतक चंद्रमा और तथागत बुद्ध–दोनों ही प्रेरणा स्रोत हैं। अतएव इन प्रेरणास्रोतों से प्रेरित हो व्यक्ति बुद्ध मार्ग पर चलकर पूर्णत्व की ओर अग्रसर हो, ऐसी कामना है।

डॉ संघमित्रा बौद्ध

(**E**nglish translation of e**ditorial**)

Symbol of perfection: Buddha

The word perfection means the state or feeling of being complete. That is, which is completely filled, in which no space or place is left empty. Therefore, by reducing craving, a man moves towards perfection. Just as a man characterized by perfection is completely satisfied and content in every way. In this sequence, Siddhartha also attained perfection as a result of continuous practice of many births and was called Buddha. His birth, enlightenment after birth and Mahaparinirvana became symbols of perfection by being perfect.

First of all, Siddhartha spent the full period of 10 months in the womb of his mother in a healthy manner. Because the period of ten months is sufficient for the physical and mental development of the fetus.

When Siddhartha was born, his parents' desire for a son was fulfilled, so they named him Siddhartha. On the fifth day of the child's birth, Asit Rishi, seeing the symptoms of a great man in him, predicted that 'If this child remains a householder, he will become a Chakravarti king and if he leaves home and becomes a monk, he will become Samyak Sambuddha. This prophecy also indicates completeness because becoming the emperor of emperors i.e. Chakravarti king is in itself indicative of completeness from a worldly point of view and becoming Samyak Sambuddha with detachment and knowledge is the best completeness.

Siddhartha Kumar started his education at the age of eight. He attained perfection by mastering all the scriptures and disciplines of that time by the age of seventeen. At the age of seventeen, he found beautiful, cultured and virtuous Yashodhara as his wife and moved towards family perfection. After this, at the age of 29, he attained the perfection of worldly religion by attaining a son-gem.

To get rid of sorrows, Siddhartha Kumar meditated for 6 consecutive years with firm determination and attained knowledge under the Bodhi tree at the age of 35. Thereafter he was called Samyak Sambuddha. After attaining enlightenment, Buddha showered the rain of Dharma till the age of 80 and he became the one who relieved the world from suffering, became a bridge of compassion. In this sequence, his teachings have been divided into first sermon, middle sermon and last sermon. Immediately after attaining enlightenment, he uttered these verses of the first sermon-

"I have been running in the world for many births without stopping. Searching for the one who builds the house (craving), I have fallen into sorrow (fear) again and again. Hey house builder (craving)! I have seen you, you will not be able to raise your head again. All your links have been broken. The top of the house has fallen. The mind has become free from impressions. Having destroyed the craving, I have become an arhat.

Buddhist literature is enriched and worth seeing with many such examples which reveal the sublime character and qualities of the Buddha. The four main events of the life of such a perfect Buddha - birth, attainment of enlightenment, Dhammacakkappavattana and Mahaparinirvana - happened on the full moon day itself. In this way, both the moon, the symbol of fullness, and the Buddha are related to each other and fullness is the indicator of their close relationship. Many

people who came in contact with this Buddha who attained perfection also attained perfection from his holy company.

In short, both the moon, the indicator of fullness, and the Tathagata Buddha are sources of inspiration. Therefore, it is desired that a person inspired by these sources of inspiration should walk on the path of Buddha and move towards perfection.